चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

न्यूज़लेटर

अक्टूबर–दिसम्बर, 2024

A+ Grade NAEAB-ICAR Accredited

एचएयू और मैसी विश्वविद्यालय न्यूजीलैंड संयुक्त रुप से करेंगे शैक्षणिक कार्य

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शैक्षणिक कार्यों को गति देने के लिए मैसी विश्वविद्यालय न्यूजीलैंड के प्रतिनिधि और वरिष्ठ शोध अधिकारी डॉ. क्रेग मैकगिल और विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों के बीच कुलपति प्रो बी. आर. काम्बोज की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अपने शैक्षणिक तथा अनुसंधान कार्यक्रमों को विस्तार देने के लिए देश–विदेश के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग बढ़ा रहा है और इन शैक्षणिक संस्थानों के साथ आपसी रूचि के क्षेत्रों की पहचान करके आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि दोनों विश्वविद्यालय संयुक्त डिग्री कार्यक्रमों, सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों, छात्र विनिमय कार्यक्रम और शोध परियोजनाओं पर आपसी तालमेल के साथ कार्य कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के बीच संयुक्त डिग्री और डिप्लोमा कोर्स को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिल सके और वे अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सके। इससे पहले भी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी मैसी विश्वविद्यालय से विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

उन्होंने कहा कि भविष्य में विद्यार्थियों और शिक्षकों के आदान–प्रदान के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे ताकि एक दूसरे का सहयोग करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता हासिल की सके।

मैसी विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि डॉ. क्रेग मैकगिल ने बैठक में विद्यार्थियों को विभिन्न डिग्री के मार्गो, मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति, विभिन्न फैलोशिप सर्टिफिकेट, डिप्लोमा कोर्स और मैसी विश्वविद्यालय में उपलब्ध शोध कार्यों बारे विस्तार से बताया। उन्होंने विश्वविद्यालय की मजबूत अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर जोर देते हुए बताया कि मैसी यूनिवर्सिटी में अत्याधुनिक सुविधाएं, अनुभवी संकाय व नए–नए शोध कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। डॉ. क्रेग ने उन पूर्व छात्रों की सफलता की कहानी भी बैठक में साझा की जिन्होंने मैसी यूनिवर्सिटी में अध्ययन करने के पश्चात सफल वैश्विक करियर में कदम रखा है।

वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों के साथ एक इंटरएक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया जिसमें डॉ. क्रेग द्वारा विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर दिए गए और उन्हें मैसी विश्वविद्यालय में अपने करियर को उज्जवल बनाने के लिए प्रेरित किया गया। गौरतलब है कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और मैसी विश्वविद्यालय द्वारा मोरिंगा के एक प्रोजेक्ट पर संयुक्त रूप से भी कार्य किया जा रहा है जिसमें डॉ. क्रेग मैकगिल एचएयू वैज्ञानिक डॉ. जयंती टोकस व डॉ. अक्षय भुकर के साथ कार्य कर रहे हैं।

अंतर्वस्तु

हकृवि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन	2
हकृवि व डब्ल्यूएसयू, ऑस्ट्रेलियां के बीच समझौता ज्ञापन पर हुए हस्ताक्षर	3
35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न	3
हकृवि में सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर का समापन	4
निस्वार्थ भाव से की गई सेवा, सार्थक होती है: प्रो. बी.आर. काम्बोज	4
सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है: प्रो. बी.आर. काम्बोज	5
कृषि कोष डिजिटल रिपोजिटरी–साइबर सुरक्षा एवं साहित्य चोरी विषय पर कार्यक्रम आयोजित	6
हकृवि की बाजरा किस्म को बढ़ावा देने के लिए आंध्र प्रदेश की सम्पूर्णा सीड्स कंपनी के साथ हुआ समझौता	6
कृषि में रोजगार की अपार संभावनाएं: प्रो. बी.आर. काम्बोज	7
हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता	7
हकृवि में मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित	8
एचएयू के कृषि महाविद्यालय में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित	8
हकृवि के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर की टीम ने जीता क्रिकेट का फाइनल मुकाबला	9
हकृवि में विश्व मृदा दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित	9
हकृवि में नेमाटोड रोग के निदान पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न	10
हकृवि में पंचनद शोध संस्थान द्वारा गोष्ठी का आयोजन	10
वॉटर एफिसिएंट क्रॉप कल्टीवार विषय पर बैठक आयोजित	11
हकृवि में हमारा संविधान- हमारा स्वाभिमान के तहत कार्यक्रम आयोजित	11
हकृवि को बिनौले के तेल से गोसीपोल हटाने की रासायनिक प्रक्रिया का मिला पेटेंट	12

संरक्षक

प्रो. बी.आर. काम्बोज

कुलपति

संपादक

डॉ. संदीप आर्य

मीडिया सलाहकार

मुख्य संपादक

डॉ. राजबीर गर्ग

अनुसंधान निदेशक

University Publication No.
CCSHAU/PUB#18-0026-2024-14-4

हकृवि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेंहू, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूं फसल चक्र में पराली प्रबधंन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं। कार्यशाला में हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझे, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें।

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एचएस सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। मंच का संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया।

इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत हुई जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं:

1. **डब्ल्यू एच 1402:** गेहूं की यह बौनी किस्म सूखा सहनशील एवं अगेती बिजाई के लिए उपयुक्त है। डब्ल्यू एच 1402 की औसत पैदावार 20.1 क्विंटल प्रति एकड़ व उत्पादन क्षमता 27.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म अत्यंत रोगरोधी है और गुणवत्ता में उत्तम है।
2. **आईएमएच 225:** यह मक्का की पीले दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म राष्ट्रीय स्तर पर मक्का की मुख्य बिमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई गई है। इसकी औसत पैदावार 36-38 क्विंन्टल प्रति एकड़ है।
3. **आईएमएच 226:** यह मक्का की हल्की नारंगी दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म मुख्य बीमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई गई है। इसकी औसत पैदावार 34-38 क्विंन्टल प्रति एकड़ है।
4. **एलएच 17-19:** मसूर की इस छोटे दाने वाली किस्म भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। मध्यम अवधि वाली यह किस्म 6.0 - 6.5 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत पैदावार देती है।
5. **आर. एच. 1975:** इस किस्म की सिफारिश जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए की गई है। यह किस्म 145 दिनों में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।
6. **एच एफ ओ 906:** एक कटाई वाली चारा जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 262.00 क्विंटल प्रति एकड़ हरे चारे की पैदवार देती है।
7. **हरियाणा बाकला 3:** इस किस्म की औसत उपज 9.5 क्विंटल प्रति एकड़ है तथा इसकी अधिकतम उपज 20 क्विंटल प्रति एकड़ है इसमें प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत होती है। इसकी खेती हरियाणा के सिंचित और अर्ध सिंचित क्षेत्रों में की जा सकती है।
8. धान-गेहूं फसल चक्र में पराली प्रबंधन हेतु, स्ट्रश्व मैनेजमेंट सिस्टम लगे हुए कंबाइन हार्वेस्टर द्वारा धान की कटाई के उपरांत पराली को मिट्टी में मिलाने के साथ-साथ गेहूं की बिजाई हेतु सुपर सीडर का उपयोग करें। इस मशीन से गेहूं की बिजाई करने पर परम्परागत विधि की तुलना में 43 प्रतिशत ईधन, 36 प्रतिशत श्रम तथा 40 प्रतिशत बिजाई लागत की बचत होती है।
9. गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम के लिए अप्रैल अंत से मई के प्रथम सप्ताह तक क्लोरेनट्रानिलीपरोल 18.5 प्रतिशत एस सी (कोराजन/ सीटीजन) 150 मि. ली. प्रति एकड़ की दर से 400 लीटर पानी में मिलाकर पीठ वाले पंप से मोटा फुव्वारा बनाकर फसल के जड़ क्षेत्र में डालकर हल्की सिचाई करें।
10. गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश
11. एकीकृत कृषि प्रणाली की एक हेक्टेयर मॉडल पर शोध के आधार पर मूंग-गेहूं (देसी) सरसों (10:2), मक्कालोबिया-जई-मीठी सूडान घास एवं मूंग-सरसों-मूंग फसल चक्रों की सिफारिश की गई।

हकृवि व डब्ल्यूएसयू, ऑस्ट्रेलिया के बीच समझौता ज्ञापन पर हुए हस्ताक्षर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और वेस्टर्न सिडनी विश्वविद्यालय (डब्ल्यूएसयू), ऑस्ट्रेलिया के बीच अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज जबकि वेस्टर्न सिडनी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया की ओर से कुलपति प्रोफेसर जॉर्ज विलियम्स ने नई दिल्ली में एक समझौते को औपचारिक रूप दिया।

दोनों विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को होगा फायदा

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि यह समझौता एक स्नातक दोहरी डिग्री कार्यक्रम की स्थापना पर केंद्रित है जिसका उद्देश्य शैक्षणिक अवसरों को व्यापक बनाना और दोनों विश्वविद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक अनुभवों को समृद्ध करना है। इस समझौते (31) के तहत, वर्तमान में स्नातक (बीएससी कृषि) के छात्र हकृवि में 3 साल का अध्ययन पूरा करेंगे और वेस्टर्न सिडनी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया में एक वर्ष पूरा करेंगे और उन्हें दोनों विश्वविद्यालयों से दोहरी स्नातक की डिग्री प्रदान की जाएगी। इसी प्रकार जो छात्र (3।1) के तहत वर्तमान में स्नातक (बीएससी कृषि) हकृवि से 3 साल का अध्ययन पूरा करेंगे और वेस्टर्न सिडनी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया में दो वर्ष पूरा करेंगे और उन्हें दोनों विश्वविद्यालयों से दोहरी स्नातकोत्तर (एमएससी कृषि) की डिग्री प्रदान की जाएगी। इस समझौते से विश्वस्तरीय शिक्षा और अनुसंधान के अवसर प्रदान करने के लिए दोनों विश्वविद्यालयों की प्रतिबद्धता को बल मिलेगा। गौरतलब है कि हकृवि पहले से ही अनुसंधान और शैक्षणिक क्षेत्रों में डब्ल्यूएसयू के साथ सक्रिय सहयोग कर रहा है। दोहरी एमएससी और पीएचडी डिग्री पहले से ही प्रगति पर है।

इस अनुबंध के तहत दोनो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अपनी शोध को नई तकनीकों के साथ दोनों संस्थानों में निपुणता के साथ पूरा करने में एक दूसरे का सहयोग करेंगे, जिससे शोध की गुणवत्ता में सुधार होगा तथा विद्यार्थियों को उच्च शैक्षणिक संस्थानों में रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक का समापन हुआ, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह मुख्यातिथि रहे जबकि बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व उप-महानिदेशक (बागवानी), डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पार्थासारथी व एडीजी डॉ. सुधाकर पांडे उपस्थित रहे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, कालीकट, केरल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने भाग लिया। मुख्यातिथि डॉ. एसके सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है।

भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्धः प्रो. बी.आर. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण 'मसालों की भूमि' के रूप में भी जाना जाता है। भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से, भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 का उत्पादन करता है। भारत में उगाए जाने वाले कुल 63 मसालों में से 20 को बीज मसालों के रूप में वर्गीकृत किया गया है जिनके सूखे बीज या फलों का उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है। इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में तीन दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली सात नई किस्मों की पहचान की गई। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने मसालों के उत्पादन एवं अनुसंधान से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान ने कार्यक्रम में आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया।

हकृवि में सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर का समापन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय सभागार में छात्र कल्याण निदेशालय, राज्य एनएसएस इकाई तथा उच्च शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर का समापन हुआ। नलवा विधानसभा क्षेत्र से विधायक रणधीर पनिहार बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

मुख्यातिथि रणधीर पनिहार ने अपने संबोधन में कहा कि भारतवर्ष को विकसित राष्ट्र बनाने में युवाओं की अह्म भूमिका होगी। राष्ट्र की एकता एवं अंखडता को बनाए रखने के लिए समस्त देशवासियों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। इस कार्य में स्वयंसेवक अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम छोटे-छोटे कार्य से समाज में परिवर्तन ला सकते हैं, तभी देश में बड़ा बदलाव आएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के पास अपने शैक्षणिक, अनुसंधान, विस्तार और सामाजिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मजबूत बुनियादी ढांचा है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि युवाओं के व्यक्तित्व विकास में एनएसएस की अह्म भूमिका है। भारत एक युवाओं का देश है। देश विकसित राष्ट्र तभी बनेगा जब भारत का युवा जागरूक होगा। एनएसएस युवाओं को समाज सेवा के महत्व, नेतृत्व क्षमता का विकास, समाज के कमजोर वर्ग की मदद तथा शारिरिक व मानसिक विकास की तैयारी पर जोर देता है। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास एवं सामुदायिक सेवा की भावना विकसित करके हम समाज व राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर सकते हैं।

राज्य एनएसएस अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार ने कहा कि हरियाणा देश में एकमात्र ऐसा राज्य है जो एक वर्ष में 10 से अधिक राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित करने के साथ-साथ विभिन्न श्रेणियों के शिविर भी आयोजित करता है। एनएसएस के क्षेत्रीय निदेशालय से आए मनोज कुमार ने कहा कि स्वयंसेवक राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि राष्ट्रीय एकता शिविर ही एक ऐसा मंच है जिससे स्वयंसेवकों को सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

निस्वार्थ भाव से की गई सेवा, सार्थक होती है: प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में युवा एंड सेवा फाउंडेशन, हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में 'सेवा प्रबोधन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि थे जबकि मुख्य वक्ता के तौर पर गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के काउंसलिंग एवं प्लेसमेंट सैल के निदेशक श्री प्रताप सिंह उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि जैसे टेक्नोलॉजी का विकास होने से समय की जो बचत होती है क्या हम उस समय का सदुपयोग कर पा रहे हैं, ये सोचने का विषय है। उन्होंने कहा कि युवा में आत्मविश्वास होना चाहिए। युवाओं को सोचना चाहिए कि किसी भी परिस्थिति में कितने भी कठिनाई आए, हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचना है। मेहनत करने से सफलता अवश्य मिलती है। लक्ष्य तक पहुंचने के लिए मेहनत और निरंतरता बहुत जरूरी है।

उन्होंने कहा कि लक्ष्य को निर्धारित करके अपना हर कार्य करना चाहिए। कोई भी कार्य जो हम दूसरों के परोपकार के लिए करते हैं वो सेवा ही है। सेवा ही पुण्य का काम है। उन्होंने महान वैज्ञानिक एडिसन का उदाहरण देते हुए कहा कि 1000 बार असफल होने के बाद उन्होंने बल्ब का आविष्कार किया, अगर वह यह प्रयास न करते तो आज यह रोशनी हमें देखने को ना मिलती। जीवन में सकारात्मक सोच के साथ चलोगे तो लक्ष्य की प्राप्ति होगी। उन्होंने युवाओं से प्रेरणादायी पुस्तकें पढने का भी आह्वान किया।

दूसरों की भलाई के लिए किया गया कार्य ही सेवा : प्रताप सिंह

मुख्य वक्ता प्रताप सिंह ने कहा कि भारत देश की सभ्यता, इसकी संस्कृति और इसके जीवन मूल्य गहराई से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि हमारे 18 पुराणों का निचोड़ कुछ है तो वह परोपकार और दूसरों की सेवा है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद का उदाहरण देते हुए कहा कि स्वामी विवेकानंद जी कहते थे कि नर सेवा ही नारायण की सेवा है। उन्होंने कहा कि मानव सेवा ही माधव की सेवा है। तुलसीदास जी ने कहा है कि दूसरो के हित, दूसरों की सेवा तथा दूसरों का कल्याण करना इससे बड़ा धर्म कोई नहीं है। भारत युवाओं का देश है और 65 प्रतिशत आबादी हमारे युवाओं की है। इस सत्र का मुख्य उद्देश्य है कि युवा सेवा के भाव को समझे। उन्होंने युवाओं से कहा कि हमारे भीतर सेवा का जुनून होना चाहिए। सेवा को अपने स्वभाव में लाने की आवश्यकता है।

सेवा छोटी या बड़ी नहीं होती, हम किसी की मदद करके, किसी भूखे को खाना खिलाकर, प्यासे को पानी पिलाकर भी सेवा कर सकते हैं। सेवा प्रबोधन से जुड़े वीरेन्द्र व हेमंत भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है: प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना- 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्त्व', विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक संपन्न हुई। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित इस बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रही।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि नेमाटोलॉजी विभाग ने अपनी स्थापना के पश्चात नई ऊंचाइयों को छुआ है और शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। विभाग ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सूत्रकृमि प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर कृषि के क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने में अहम योगदान दिया है। उन्होंने बताया कि संरक्षित कृषि प्रणाली, अमरूद व नींबू के बागों, सब्जी की फसलों, चावल-गेहूं व अन्य फसलों में भी जड़-गांठ सूत्रकृमि की समस्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि किसान जानकारी के अभाव में नर्सरी से रोगग्रस्त पौधों को अपने खेत या बाग में लगा देते हैं, जिससे बाद में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि बागवानी फसलों को लगाने से पहले किसान को अपने खेत की मिट्टी जांच अवश्य करवानी चाहिए ताकि समय रहते बीमारी का पता लगाया जा सके। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है। हरियाणा की कृषि उत्पादकता पर इन सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिरोधी फसल किस्मों, फसल चक्र और प्रभावी जैव कीटनाशकों के उपयोग के बारे में किसानों को जागरूक किया जा रहा है।

विशिष्ट अतिथि डॉ पूनम जसरोटिया ने नैनो टेक्नोलॉजी, आरएनएआई से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से कीड़ों की रोकथाम के महत्व पर प्रकाश डाला। इस समीक्षा बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधिकारियों और विशेषज्ञों की मौजूदगी में प्रयोगात्मक नतीजों और महत्वपूर्ण उपलब्धियों बारे जानकारी दी गई। बैठक में विभिन्न केन्द्रों के सूत्रकृमि वैज्ञानिकों ने पिछले साल के कार्यो के आधार पर अपने अनुभव सांझा किए।

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ गौतम चावला ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने प्राकृतिक खेती, विभिन्न फसलों, दालों, सब्जियों एवं किसानों को विभिन्न प्रकार की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में भी बताया।

डॉ. आरके जैन ने सूत्रकृमि वैज्ञानिकों के पदों की संख्या बढ़ाए जाने पर जोर दिया ताकि देश में बढ़ती जा रही इस समस्या से निपटने के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया जा सके। डॉ. एचएस गॉड ने बताया कि भूतकाल के अनुभव से भविष्य की योजना बनाकर सूत्रकृमि का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

डॉ. क्रान्ति ने संरक्षित खेती में सूत्रकृमि नियंत्रण के बारे में बताया। बैठक में डॉ. हेमराज, डॉ. निशी केसरी, डॉ.होसागुदार, डॉ. प्रहलाद, डॉ. आशीष कुमार व डॉ. मंजुनाथ ने गत वर्ष के दौरान किए गए कार्यो की जानकारी दी। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने सभी का स्वागत किया जबकि सूत्रकृमि विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मंच का संचालन डॉ. चेत्रा भट्ट ने किया। इस बैठक में देश भर के 24 केन्द्रों के वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

कृषि कोष डिजिटल रिपोजिटरी-साइबर सुरक्षा एवं साहित्य चोरी विषय पर कार्यक्रम आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में कृषिकोष डिजिटल रिपोजिटरी, साइबर सुरक्षा और शिक्षा एवं अनुसंधान में साहित्यिक चोरी विषय पर एकदिवसीय संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। हकृवि के नेहरू पुस्तकालय द्वारा आईसीएआर व आईएआरआई के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों में कृषिकोष डिजिटल रिपोजिटरी के बारे में जागरूकता लाना, रिपोजिटरी के उपयोग को बढ़ाना तथा शैक्षणिक एवं शोध समुदाय को साइबर सुरक्षा एवं साहित्यिक चोरी के प्रति संवेदनशील करना है। उन्होंने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रचार एवं प्रसार के कारण ज्ञान किसी राज्य या देश की परिधि व समय में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों की विभिन्न तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से दूर फैल रहा है।

उन्होंने बताया कि विभिन्न प्रकार के ई-संसाधनों वाले ई-रिपोजिटरी ने इस संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा हाल के वर्षो में अनुसंधान और विकास का केंद्र बन गए हैं। कृषि और सकल घरेलू उत्पाद देश का बहुत बड़ा क्षेत्र है इसलिए छात्रों वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं के लिए समय पर सूचना पहुंचना अति आवश्यक है। कृषिकोष सही और प्रामाणिक डाटा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने बताया कि नेहरू पुस्तकालय में 2 लाख 50 हजार पुस्तकें है। 2 लाख 6 हजार थीसिज उपलब्ध है जिससे शोधकर्ताओं को नए शोध करने में मदद मिलती है।

आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली के प्रधान वैज्ञानिक व पीआइ (ई-ग्रंथ) डॉ. अमरेन्द्र कुमार ने बताया कि कृषि कोष एक ऐसी डिजिटल रिपोजिटरी है जिसमें देश की समस्त कृषि विश्वविद्यालय एवं कृषि अनुसंधान संस्थानों में किए गए शोध के शोधग्रंथों, अप्रकाशित साहित्य एवं संस्थागत प्रकाशन आदि इसमें उपलब्ध हैं।

नेहरू पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार पटेरिया ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि एनएआईपी 'कृषिप्रभा' के माध्यम से शोध प्रबंधों को डिजिटल बनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। डिप्टी लाईब्रेरियन डॉ. सीमा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की बाजरा किस्म को बढ़ावा देने के लिए आंध्र प्रदेश की सम्पूर्णा सीड्स कंपनी के साथ हुआ समझौता

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित बाजरे की उन्नत किस्मों की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। इसके लिए विश्वविद्यालय ने तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए आंध्र प्रदेश की सम्पूर्णा सीड्स कंपनी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्में ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचे, इसके लिए विभिन्न राज्यों की कंपनियों के साथ समझौते (एमओयू) किए जा रहे हैं। उपरोक्त समझौते के तहत विश्वविद्यालय द्वारा विकसित बाजरे की एचएचबी 67 संशोधित-2 का बीज तैयार कर कंपनी किसानों तक पहुंचाएगी ताकि उन्हें इस किस्म का विश्वसनीय बीज मिल सकें और उनकी पैदावार में इजाफा हो सकें।

विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा आंध्र प्रदेश की सम्पूर्णा सीड्स कंपनी की तरफ से श्री वाई रमेश ने हस्ताक्षर किए हैं। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने बताया कि समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होने के बाद अब कंपनी विश्वविद्यालय को लाइसेंस फीस अदा करेगी, जिसके तहत उसे बीज का उत्पादन व विपणन करने का अधिकार प्राप्त होगा। इसके बाद किसानों को भी इस उन्नत किस्म का बीज मिल सकेगा।

बाजरा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल यादव ने बताया कि एचएचबी-67 संशोधित 2 बाजरा की सुप्रसिद्ध संकर किस्म एचएचबी 67 संशोधित का जोगिया रोग प्रतिरोधी उन्नत रूपांतरण है। यह संकर किस्म हरियाणा, राजस्थान व गुजरात के बारानी क्षेत्रों में आम काश्त के लिए 2021 में अनुमोदित की गई है। एच एच बी 67 संशोधित के नर जनक एच77/833-2-202 को चिन्हित (मार्कर) सहायक चयन द्वारा जोगिया रोग प्रतिरोधी बनाया गया है।

कृषि में रोजगार की अपार संभावनाएं: प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में राष्ट्रीय युवा पेशेवर विकास कार्यक्रम-कृषि विस्तार में नई दक्षता, करियर के अवसर और अनुसंधान विषय पर पांच दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय के विस्तार शिक्षा विभाग तथा राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान हैदराबाद द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान हैदराबाद के निदेशक (कृषि विस्तार) डॉ. श्रवणन राज विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। कार्यक्रम में राजस्थान, पंजाब, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश पूसा संस्था दिल्ली सहित विभिन्न प्रदेशों के 65 शोधार्थियों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि विस्तार के क्षेत्र में नवाचार कौशल विकास और अनुसंधान उत्कृष्ट को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रमाण है। विश्व में हो रहे तकनीकी विकास,अनुसंधान और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रचार- प्रसार के कारण कृषि विस्तार की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है जो अनुसंधान संस्थानों और कृषक समुदाय के बीच सेतु का काम कर रही है। उन्होंने बताया कि कृषि में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। युवाओं को आधुनिक तरीकों से कृषि के विस्तार से जुडना होगा। सूचना प्रौद्योगिकी तकनीकों जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को इस्तेमाल करके विस्तार शिक्षा को बढ़ावा देना होगा जो वर्तमान समय की मांग है। उन्होंने कहा कि आज हमें कृषि विस्तार और कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक के प्रचार-प्रसार करने में कृषक उत्पादक समूह (एफपीओ) के सहयोग की भी आवश्यकता है। युवा पेशेवरों ,शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं को एक मंच पर लाकर उन्हें सीखने और नवाचार के लिए प्रेरित करना होगा।

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान हैदराबाद के संस्थान निदेशक एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. श्रवणन राज ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में युवाओं को आगे लाने के लिए प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी का स्वागत किया। कृषि विस्तार शिक्षा के विभागाध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच संचालन डॉ. अनुपम आनन्द ने किया।

हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है। मॉडल को विकसित करने में डॉ. एसके यादव, डॉ. आरके नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आरएस दादरवाल, डॉ. आरडी जाट और डॉ. कविता का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। उन्होने बताया कि यह मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरुम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते हैं। ये 1.0 हेक्टेयर मॉडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है। इस मॉडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है।

सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ एस.के. ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010-11 में शोध कार्य शुरु किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित किया गया है।

हकृवि में मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में मधुमक्खी पालन पर 7 दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) व राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे। इस प्रशिक्षण में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 28 अधिकारी एवं जवानों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि मधुमक्खी पालन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। मधुमक्खी पालन कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि छोटे व सीमांत किसान, भूमिहीन और बेरोजगार युवक मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। हरियाणा मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश है। भारत दुनिया के प्रमुख शहद निर्यातक देशों में से एक है। हमारे देश में शहद उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक अन्य देशों में निर्यात किया जा रहा है। देश को श्वेत क्रांति, हरित क्रांति और नीली क्रांति के बाद अब 'मीठी क्रांति' की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी अनाज उत्पादन की बढ़ोतरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग करने से मधुमक्खियों को नुकसान होता है। इसलिए किसान कीटनाशकों का प्रयोग सीमित मात्रा में करें।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान अनुभवी वैज्ञानिकों द्वारा मधुमक्खी पालन से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी गई। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि किसानों को मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन तथा मशरूम की खेती के बारे में जागरूक करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा तमाम जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है ताकि किसान अपनी आय में बढ़ोतरी कर सके। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी दी। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. मनोज कुमार ने पारित किया। मंच का संचालन डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने किया।

एचएयू के कृषि महाविद्यालय में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय सभागार में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बीएससी, एमएससी, एग्रीबिजनेस तथा पीएचडी परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने पुरस्कार वितरित किए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा की हकृवि के विद्यार्थियों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। विद्यार्थियों ने कड़ी मेहनत एवं लगन के साथ पढ़ाई करके अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने यूपीएससी, एआरएस, एचसीएस, एचपीएससी सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करके उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। यहां के विद्यार्थी देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी प्रदेश एवं देश का नाम रोशन कर रहे हैं। इसका श्रेय विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन तथा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक माहौल को जाता है। हकृवि के विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ समझौते होने के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर का शैक्षणिक माहौल है जिससे विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं व करियर में नित नई ऊंचाईयां छू रहे हैं।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस. के. पाहुजा ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि महाविद्यालय में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में बीएससी एग्रीकल्चर (चार वर्ष) के 101 छात्र, बीएससी एग्रीकल्चर (छः वर्ष) 65 विद्यार्थी, बीएससी एग्रीबिजनेस मेनेजमेंट के 9 विद्यार्थी, स्नातकोत्तर तथा पीएचडी के 572 विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हकृवि के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर की टीम ने जीता क्रिकेट का फाइनल मुकाबला

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के इंटर कॉलेज क्रिकेट प्रतियोगिता में कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी और कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, हिसार के बीच फाइनल मुकाबला खेला गया। इस मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करने उतरी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी की टीम ने अपने निर्धारित ओवर में 93 रन ही बना सकी।

इसके जवाब में खेलने उतरी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, हिसार की टीम ने यह मुकाबला 7 विकेट से जीत लिया। असलम को मैन ऑफ द मैच दिया गया। अजय खुराना, विकास चौधरी तथा अमन ने प्रतियोगिता में अंपायरिंग की तथा उनकी कुशल अंपायरिंग में एक भी विवादित निर्णय नहीं हुआ जिसे सभी ने सराहा।

टूर्नामेंट के मुकाबले में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. पवन कुमार मुख्यातिथि रहे। उन्होंने खिलाडियों को प्रोत्साहित करते हुए एकजुटता से खेलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने खिलाडियों से आह्वान किया कि वह खेलों में उच्च प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय व देश का नाम रोशन करें। इस अवसर पर छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़, सह छात्र कल्याण निदेशक (खेल) डॉ बलजीत गिरधर, रणधीर ढाका, डॉ. प्रवेश अंतिल, डॉ. देवेन्द्र बिढान, निर्मल सिंह, इन्दु चौधरी, जितेन्द्र कक्कड़, मुकेश ढ़ांडा, रविंदर खुराना एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हकृवि में विश्व मृदा दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मृदा दिवस पर सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मिट्टी की देखभाल: माप, निगरानी व प्रबंधन पर विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बी. आर. काम्बोज ने कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बी. आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि भूमि की उर्वरक क्षमता बनाए रखने के लिए मिट्टी की जांच, फसल चक्र में बदलाव, जैविक प्रबंधन और कम भू-जल दोहन वाली फसलें व तकनीकें अपनाना बेहद जरुरी है। उन्होंने कहा कि मिट्टी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तो पैदावार भी बढ़ेगी। इसलिए किसान नियमित रुप से मिट्टी की जांच करवाते रहें और उसके अनुरुप ही फसलों का चयन करें। अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से किसान की लागत भी बढ़ती है। विश्व मृदा दिवस का उद्देश्य मिट्टी के संरक्षण, महत्व और उसके टिकाऊ उपयोग के प्रति जागरूकता को बढ़ाना है। मिट्टी पृथ्वी पर जीवन का आधार है क्योंकि यह खाद्य सुरक्षा, जैव विविधता और पर्यावरण संतुलन में अह्म भूमिका निभाती है। विश्व में लगभग 95 प्रतिशत खाद्य पदार्थ मिट्टी पर निर्भर है। उन्होंने कहा कि मृदा की उपजाऊ क्षमता को बनाए रखना खाद्य सुरक्षा और आर्थिक विकास के लिए बहुत जरूरी है।

उन्होंने कहा कि किसानों को अपने खेत की मिट्टी की जांच अवश्य करवानी चाहिए। इससे किसान सीमित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करके अधिक पैदावार ले सकते हैं। किसानों की मिट्टी की जांच के लिए विश्वविद्यालय द्वारा समुचित प्रबंध किए गए हैं। किसानों को परंपरागत फसलों के स्थान पर दलहनी एवं तिलहनी फसलों की खेती करने के लिए आगे आने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि इससे उनकी आर्थिक स्थिति और अधिक मजबूत होगी। किसान फसल अवशेष ना जलाएं क्योंकि इससे भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने वाले जीवाणु समाप्त हो जाते हैं। मृदा के क्षेत्र में वैज्ञानिकों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। वैज्ञानिकों के द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों, सरकार द्वारा प्रदत्त कि जा रही सुविधाओं तथा किसानों के द्वारा की जा रही मेहनत राष्ट्र की प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कुलपति ने विभाग द्वारा आयोजित की गई भाषण प्रतियोगिता में मोनिका शर्मा, संजय व सिन्धु को पुरस्कृत कर सम्मानित किया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने विभाग की शोध संबंधी प्राथमिकताओं पर प्रकाश डाला तथा मृदा उर्वरता के जिला स्तरीय मानचित्र बनाने का सुझाव दिया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि विभाग द्वारा वर्ष 2024 में मिट्टी के 3000 तथा पानी के 2800 नमूनों की जांच की गई। उन्होंने कुलपति द्वारा पांच कृषि विज्ञान केन्द्रों में नई मिट्टी प्रयोगशाला बनाने के लिए दिए गए बजट पर उनका धन्यवाद किया। मृदा विभाग के प्रमुख डॉ. दिनेश तोमर ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। मंच का संचालन डॉ. उषा वशिष्ठ ने किया।

हकृवि में नेमाटोड रोग के निदान पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग व अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व-नमूनाकरण ,सर्वेक्षण, निष्कर्षण ,पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नेमाटोड वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि प्रशिक्षण के माध्यम से सीखी गई तकनीकों का प्रयोग करके भविष्य में सूत्रकृमि प्रबंधन के लिए नए प्रोजेक्ट बनाने में सहायता मिलेगी। पौधों को नेमाटोड से होने वाली हानि से रोकने के लिए फसल चक्र, मृदा प्रबंधन, प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग, जैविक नियंत्रण में नीम तेल और रासायनिक नियंत्रण में नेमाटिसाइड्स का उपयोग करके नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि ग्रस्त फसल की कृत्रिम बुद्धिमत्ता से पहचान की जा सकती है। संसाधनों का उचित प्रयोग व कृत्रिम बुद्धिमत्ता से नेमाटिसाइड्स का उचित प्रयोग करके न केवल सूत्रकृमि प्रबंधन बल्कि मृदा को भी हानिकारक रसायनों से बचाया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन की समस्या फसल पद्धति में विविधता पौधों की सामग्री का आदान-प्रदान हरियाणा के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों में निमेटोड की समस्या को बढ़ा रहा है। इस समस्या से निपटने के लिए प्रक्षिशित मानव संसाधन और अन्य सुविधाओं की आवश्यकता है। विभाग द्वारा नेमाटोड समस्याओं के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए लगातार नेमाटोड जागरूकता दिवस का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम के अंत में कुलपति ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का स्वागत किया। प्रशिक्षण कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने प्रशिक्षण के दौरान सिखाई गई अलग-अलग तकनीक के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने भी सूत्रकृमि प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न 16 राज्यों मणिपुर, केरल, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तराखंड, राजस्थान, अरूणाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा हरियाणा से 23 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। सूत्रकृमि विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार ने सभी का धन्यवाद किया और पाठ्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। डॉ. निशी केसरी, डॉ. निशा एमएस व डॉ. आशीष कुमार ने सभी प्रतिभागियों की तरफ से प्रशिक्षण के दौरान सीखी गई तकनीकों के लिए सूत्रकृमि विभाग का धन्यवाद किया। मंच संचालन डॉ. चेत्रा भट्ट ने किया।

हकृवि में पंचनद शोध संस्थान द्वारा गोष्ठी का आयोजन

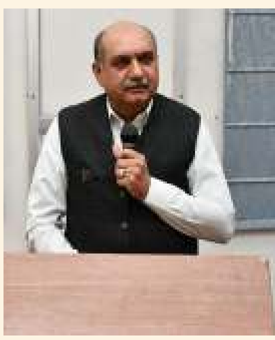

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में पंचनद शोध संस्थान अध्ययन केन्द्र हिसार द्वारा एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह गोष्ठी गीता के तथ्यों पर आधारित महाभारत कथा विषय पर आयोजित की गई। इस गोष्ठी में राज्य सूचना आयोग हरियाणा के सूचना आयुक्त प्रो. जगबीर सिंह प्रस्तोता के तौर पर उपस्थित हुए जबकि सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

राज्य सूचना आयुक्त, एवं पंचनद शोध संस्थान अध्ययन केन्द्र हिसार के अध्यक्ष प्रो. जगबीर सिंह ने अपने संबोधन में 18 दिन चले महाभारत के युद्ध व उनके पात्रों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भगवत गीता हमें पवित्रता, शक्ति, अनुशासन, ईमानदारी, दयालुता और निष्ठा के साथ जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करती है। गीता सभी धर्मों का सार है। गीता समस्याओं का समाधान भी है। गीता एक कथा ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला है। उन्होंने कहा कि श्रीमद् भागवत गीता चारों वेदों का संक्षिप्त रूप है। गीता एक संवाद है जो महाभारत युद्ध के दौरान श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच हुआ था। गीता में 700 श्लोक और 18 अध्याय हैं। गीता भारतीय संस्कृति की आधारशिला है। हिन्दू शास्त्रों में गीता का सर्वप्रथम स्थान है। लोकप्रियता में इससे बढ़कर कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है और इसकी लोकप्रियता दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।

श्रीमद्भागवद्गगीता की पृष्ठभूमि महाभारत का युद्ध है। मनुष्य अपने जीवन की समस्याओं में उलझकर कर्तव्यविमूढ़ हो जाता है और जीवन की समस्याओं से लडने की बजाए उससे भागने का मन बना लेता है। गीता हमें हर परिस्थिति में बेहतर कार्य करने की प्रेरणा देती है।

विशिष्ठ अतिथि कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने बताया कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया और उन्हें न्याय और अन्याय में से सही का चयन करने की दिशा दिखाई। हम सभी कभी-कभी अनिश्चय की स्थिति में या तो हताश हो जाते हैं और या फिर अपनी समस्याओं से विचलित हो जाते हैं। गीता के ज्ञान से हम हर परिस्थिति से पार पा सकते हैं।

वॉटर एफिसिएंट क्रॉप कल्टीवार विषय पर बैठक आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वॉटर एफिसिएंट क्रॉप कल्टीवार विषय पर चौथी उच्चस्तरीय समिति की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बी. आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि पंजाब विश्वविद्यालय लुधियाना के पूर्व कुलपति एवं समिति के चेयरमैन पद्मश्री डॉ. बी. एस. ढिल्लों विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। बैठक में पीडब्ल्यूआरडीए के तकनीकी सलाहकार व पंजाब के पूर्व कृषि निदेशक राजेश वशिष्ठ, कृषि महाविद्यालय पीएयू के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. एसएस कुकल एवं भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. सीएल आचार्य भी उपस्थित रहे। इस उच्चस्तरीय समिति का मुख्य उद्देश्य जल संसाधनों के अधिक दोहन को रोकना, खरीफ मौसम में कम पानी में उगाये जानी वाली किस्मों को प्रचलित करना व इनसे संबंधित शोध की समीक्षा करना तथा अन्य संस्थानों के साथ शोध को बढावा देना है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि जल जैसे अमूल्य प्राकृतिक संसाधन के कृषि में सदुपयोग करने व उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप कृषि योजना बनाकर प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के महत्व के बारे में अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि खरीफ के मौसम में कम पानी में उगाई जाने वाली व बेहतर उत्पादन देने वाली किस्मों को उगाने के लिए उन्नत सस्य क्रियाएं अपनाकर जल संरक्षण करने पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि भावी पीढी के उज्जवल भविष्य के लिए जल संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। बायोसैंसर जैसी आधुनिक तकनीक का जल संसांधनों में बेहतर उपयोग किया जा सकता है। मक्का की फसल धान वाले क्षेत्रों में पानी बचाने के लिए एक बेहतर विकल्प हो सकती है। मक्का का साईलेज 70-80 दिन में तैयार हो जाता व चारे की कमी के दिनों में पशुओं के लिए उपयोगी होता है। इसी तरह गेहूं वाले क्षेत्रों में राया की फसल उगा कर पानी की बचत की जा सकती है। राया के बाद छोटी अवधि की फसल जैसे मूंग उगायी जा सकती है जिससे मुनाफा बढने के साथ संसाधनों की बचत भी होगी। पद्म श्री डॉ बी. एस. ढिल्लों ने बताया कि खरीफ के मौसम में धान की कम पानी में उगाई जाने वाली व धान की सीधी बिजाई के लिए उपयुक्त किस्मों के बारे में चर्चा की। उन्होंने खरीफ में उगाए जाने वाली अन्य फसलें जैसे मूंग, अरहर, बाजरा व कपास की भी कम पानी में बेहतर पैदावार देने वाली किस्मों बारे चर्चा की।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बैठक में सभी का स्वागत करते हुए धान-गेहूं फसल चक्र में पानी की बचत के लिए विभिन्न तकनीकों व पहलुओं पर अपने विचार रखे।

हकृवि में हमारा संविधान- हमारा स्वाभिमान के तहत कार्यक्रम आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान व मानविकी महाविद्यालय के सभागार में भारतीय संविधान के 75 वर्ष होने पर हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान के तहत ट्टसंविधान सभा में डॉ. अंबेडकर की भूमिका व प्रभावट्ट विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि डॉ. बी.आर. आंबेडकर अध्ययन केंद्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के निदेशक डॉ. प्रीतम सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद रहें व कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने अध्यक्षता की।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि भारतीय समाज के उत्थान में डॉ. भीम राव आंबेडकर का अविस्मरणीय योगदान रहा है। जीवनपर्यन्त असमानता, अशिक्षा जैसी बुराइयों को मिटा कर उन्होंने सभी जाति व धर्म के लोगों को एक सूत्र में पिरोकर देश को संगठित किया व समरसता स्थापित की। डॉ. भीम राव आंबेडकर ने संविधान सभा व भारतीय संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होनें सविधान सभा की ड्राफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष के तौर पर भी कार्य किया। वह एक महान नेता, व समाज सुधारक थे जिन्होनें भारतीय समाज में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका दृष्टिकोण और विचारधारा मानववादी रही। डॉ. आंबेडकर ने शिक्षा, पर्यावरण, कानून और अर्थशास्त्र सहित विभिन्न विषयों पर भी समाज को नई दिशा देने के लिए कार्य किया।

उन्होंने बताया कि भारतीय संविधान को ड्राफ्ट करने में दिए विशेष योगदान के लिए भी हम उन्हें याद करते हैं। भारतीय संविधान के 75 वर्ष पूर्ण होने पर सरकार द्वारा आगामी एक वर्ष तक कार्यक्रम आयोजित किए जाएगें जिनमें विद्यार्थियों व आम नागरिकों को संविधान से संबंधित सभी जानकारियां उपलब्ध करवाई जाएगी।

मुख्य वक्ता डॉ. प्रीतम सिंह ने बताया कि हम संविधान और डॉ. आंबेडकर को अलग-अलग करके नही देख सकतें। उन्होनें बताया कि देश में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व संविधान निर्माता डॉ. भीम राव आंबेडकर के बारे में सबसे ज्यादा शोध हुआ है। कुलसचिव एवं कार्यक्रम के आयोजक डॉ. पवन कुमार ने सभी का स्वागत किया व कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। मौलिक विज्ञान व मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच संचालन छात्रा भाग्यश्री ने किया।

हकृवि को बिनौले के तेल से गोसीपोल हटाने की रासायनिक प्रक्रिया का मिला पेटेंट

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने कपास बीज उत्पादों से गोसीपोल को हटाने के लिए एक रासायनिक प्रक्रिया में पेटेंट हासिल किया है। पेटेंट का भारत सरकार की ओर से प्रमाण-पत्र मिल गया है। भारत सरकार के पेटेंट नियंत्रक की ओर से जैव रसायन, कपास अनुभाग, आनुवंशीकी और पौध प्रजनन विभाग द्वारा विकसित इस तकनीक को पेटेंट संख्या 555667 प्रदान की गई है। पेटेंट कार्य में डॉ. शिवानी मानधनियॉ, डॉ. राजबीर सांगवान और डॉ. अरुण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुलपति प्रो बी. आर. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है कि कपास के तेल से हानिकारक गोसीपोल योगीक को हटाने का पेटेंट विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है। इससे यह तेल खाने के लिए उपयुक्त हो जाता है। गोसीपोल युक्त तेल खाने से मानव शरीर को हानि पहुचती है। गोसीपोल युक्त तेल के सेवन से सांस लेने में तकलीफ, शरीर के वजन में कमी और कमजोरी आदि के लक्षण दिखाई देते हैं। कपास के तेल से गोसीपोल के दोनों स्टीरियोआइसोमर्स को हटाना इसके सेवन के लिए अति आवश्यक है।

पेटेंटकर्ता वैज्ञानिक डॉ. शिवानी मानधनियॉ ने गोसीपोल हटाने की तकनीकी जानकारी साझा करते हुए बताया कि बिनौले के तेल को कार्बनिक विलायक के साथ मिलाया जाता है और कुछ रासायनिक यौगिकों की उपस्थिति में फिल्टर किया जाता है जोकि एक सोखना और अवशोषित करने के रूप में कार्य करता है। उन्होंने पेटेंट के विश्लेषणात्मक कार्य में प्रयुक्त उपकरण की खरीद विकास योजना (आरकेवीवाई), हरियाणा सरकार का आभार व्यक्त किया।

पेटेंट की विशेषताएं:

1. इस प्रक्रिया के विशेष गुण यह हैं कि इसमें तेल को बिना उबाले गोसीपोल को हटाया जाता है जिससे कपास के तेल के प्राकृतिक गुण बने रहते है:
2. गोसीपोल के दोनों आइसोमर्स (और -) को हटाने के अलावा, बिनौले के तेल से कुछ भारी धातुओं को भी हटाया गया है,
3. इस प्रक्रिया को आम आदमी भी आसानी से न्यूनतम संसाधन की सहायता से गोसीपोल को हटा सकता है।

गैर पारंपरिक खाद्य तेलों में कपास के बीज का तेल अपने उच्च पोषक मूल्य, उच्च स्मोक पॉइंट और विटामिन ई की उपस्थिति के कारण सबसे अधिक उपयोग किया जाता है।

फीडबैक

मीडिया एडवाइज़र

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार- 125 004

दूरभाष : 01662-255307

ई-मेल : mediaadvisorhau@gmail.com / prohaunews@gmail.com

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार- 125 004 (हरियाणा), भारत

(1970 की संसदीय अधिनियम संख्या 16 द्वारा संस्थापित)

वेबसाईट : www.hau.ac.in

Published by Media Advisor on behalf of CCS Haryana Agricultural University, Hisar. Printed at : Dorex Offset, Hisar Mob. 98960-11117